NJESR/March-2022/Volume-4/Issue-3 E-ISSN-2582-5836
DOI-10.53571/NJESR.2022.4.3.31-34

शोध आलेख

गोविन्द मिश्र की कहानी में महानगर

शोधार्थी

मंजू शर्मा

(Received:15 February 2022/Revised:25Feburary 2022/Accepted:10March 2022/Published:13 March2022)

manjubkn77@gmail.com

सार

आधुनिकीकरण के इस दौर में जब सब कुछ बदल रहा है तो भारतीय संस्कृति परिवेश में भी बदलाव आना आश्चर्य की बात नहीं है। परिवर्तन शाश्वत है, इसे स्वीकारना भी चाहिए लेकिन अपने जीवन मूल्यों व अपने परिवेश को दिखावे की होड या मजबूरी में बदलने की प्रक्रिया किस प्रकार व्यक्ति के जीवन में द्वंद्व, त्रासदी को पैदा कर देती है का चित्रण गोविन्द मिश्र की कहानियों में देखने को मिलता है। मिश्र जी ने अपनी कहानियों में गांव या छोटे शहरों से बड़े महानगरों की ओर पलायन कर महानगरों की शहरी संस्कृति, भौतिकता, भागदौड, संवेदनहीन जीवन संस्कृति में ढलने का प्रयास करती नई पीढ़ी, बच्चे व वृद्धों का चित्रण अपनी कहानियों में किया है।

विश्व भूमंडलीकरण की प्रक्रिया से गुजरते हुए विकास के पथ पर निरन्तर अग्रसर है इस विकास के पीछे औद्योगिक क्रांति का महत्वपूर्ण योगदान रहा है। औद्योगिक क्रांति से ना केवल आर्थिक क्षेत्र में उन्नति हुई बल्कि सामाजिक, राजनीतिक, सांस्कृतिक क्षेत्र भी इससे प्रभावित हुए हैं। सामाजिक क्षेत्र की दृष्टि से देखें तो औद्योगिक क्रांति ने इस क्षेत्र को बहुत अधिक प्रभावित किया है। नए नए उद्योगों की, कारखानों की स्थापना के लिए जंगल खेतों को साफ कर दिया गया, वहां पर खेती के स्थान पर बड़े–बड़े धुँऐं छोडते कारखाने स्थापित हो गए एक और इन कारखानों से निकलने वाली दूषित पदार्थों से पर्यावरण प्रदूषित हो रहा है तो वहीं दूसरी ओर इन कारखानों में काम करने के लिए गांव, कस्बों से बड़ी संख्या में लोग शहर की ओर पलायन करते हैं अपनी जमीन, अपना घर, अपने खेत, अपने परिवार को छोड़कर यह बड़ी भारी भीड़ जब शहर पहुंचती है, वहां के यथार्थ परिवेश से आमना–सामना होने पर इनके जीवन पर किस प्रकार का प्रभाव पड़ता है का चित्रण आधुनिक हिंदी कहानियों में देखने को मिलता है। हिंदी कहानीकारों में गोविन्द मिश्र भी एक ऐसे हस्ताक्षर है जो अपनी कहानीयों में बड़े महानगर की जीवन शैली का चित्रण करते हैं शहरी संस्कृति की ओर आने वाली उन छोटे शहर, कस्बे व गांव के मनुष्य का चित्रण करते हैं जो अपने परिवेश को छोडकर दूसरे परिवेश को आत्मसात करने के लिए संघर्ष करते हैं, इस संघर्ष में उनकी संवेदनाएं, उनके द्वंद्व, उनके संघर्ष व कष्टों का यथार्थ चित्रण मिश्र की कहानियों में देखा जा सकता है। मिश्र जी अपनी कहानियों में एक ग्रामीण से शहरी बनने का सपना देखने वाली युवा पीढ़ी की व्यथा संवेदना वे मजबूरी का चित्रण करते वक्त उन सवालों के पीछे जरूर जागते हैं की शहर की ओर पलायन अर्थात अपनी जड़ों को छोड़ने के पीछे क्या कारण है उनकी कहानी 'हमदर्दी' में ऐसे ही एक बेरोजगार युवक का शहर में नौकरी की तलाश का चित्रण किया गया है किस प्रकार एक बेरोजगार युवक रोजगार की उम्मीद लगाता है, वह शहर आकर भूखा प्यासा रह कर अपनी तलाश को पूरा करने के फेर में स्वयं को बीमार कर लेता है और सड़क पर बेहोश होकर गिर जाता है, उसकी इस स्थिति को देखकर वहां पर लोगों की भीड़ उसके साथ हमदर्दी दिखना चाहती है लेकिन वह नहीं चाहता कि कोई उसे खाने पीने या पहनने ओढ़ने के लिए दे वह अपने प्रति हमदर्दी, सहानुभूति दिखाने वालों की तरफ देखता है कि अगर वे वास्तव में उसकी सहायता करना चाहते ही हैं तो क्या वह उसे अपने पैरों पर खड़ा होने में सहायता कर सकता है। ''यह कांप रहा है...इसे फौरन कपड़ा देना चाहिए, 'नहीं भूखा है...पहले खाना' 'अरे पहले उसे उठा कर खड़ा तो करो'। वह कसमसाता है, मन करता है कितने

Created by Universal Document Converter

बैचेन हो कुछ करने को तुम लोग....पर क्या कर सकते हो उठा कर सड़क पर खड़ा कर दोगे और अपने अपने घर चले जाओगें। बस ना ? मुझे...खाना...कपड़ा नहीं चाहिए.....घर भी नहीं....अपने पैरों पर खड़े होने की सुविधा चाहिए.....दे सकता हो क्या'' ?[1]

कई सपनों व आशाओं को पाले ऐसे ही नौजवान अपने व अपने परिवार की विकास तथा सुख सुविधा पूर्ण जीवन की उम्मीद लिए महानगर की ओर रवाना हो जाते हैं महानगर की नौकरी में उनका व उनके परिवार का भला है ऐसे विचारो से वे भ्रमित होते हैं। इसलिए वे शहर की नौकरी प्राप्त करने के लिए इधर–उधर किसी ना किसी की जी–हजूरी या एहसान लेते रहते हैं। मिश्र जी अपनी कहानी 'गुरूजी' में ऐसे ही नौजवान की बेबसी का चित्रण करते हैं जो शहर के किसी प्रतिष्ठित व्यक्ति के पास जो गुरूजी के नाम से जाने जा सकते हैं के पास जाता है और उनसे अपनी अस्थाई नौकरी को बचाने की विनती करता है, ''गुरूजी कहते है–गांव क्यों नहीं लौट जाते, मैंने सुझाया, गुरूजी मैं यहां कुछ बनने आया था....ऐसे बीच में कैसे लौट जांऊ ? 'हर कोई यहाँ कुछ बनने ही आता है', 'मैं उस पर बरस पड़ा'। जैसे छोटी जगहों पर कुछ बना ही नहीं जा सकता। बम्बई मैं क्या बन सकोगे तुम ? क्या है जो यहां मिल सकता है तुम्हें...। एक अदद कमरे के लिए जिन्दगी भर रगड़ते रहो और अगर वह मिल भी जाए तो उसमें ही कीड़े–मकोड़े की तरह, बिलबिलाते हुए मर जाओ। क्या हीरो बनने आए थे ?''[2] गांव या कस्बे में सीधा सादा जीवन व्यतीत करने वाले लोग शहर में पहुंचकर उसकी रंग बिरंगी दुनिया विशेष तौर पर मुंबई जैसे महानगर मे आकर किस प्रकार भटक जाते हैं कैसे वे वहां के कल्पना लोक के जाल में उलझ कर रह जाते हैं। मिश्र जी की कहानी 'आकरमाला' इसका सटीक उदाहरण है। जिसमें हंसा नामक स्त्री की व्यथा है। वह कितने सपने लेकर पति और बच्चों के साथ शहर आई थी लेकिन वहां उसका पति गलत रास्ते पर चला गया बच्चों का जो जीवन स्तर देने की सोची उससे बदतर उनका जीवन हो गया और हंसा स्वयं की स्थिति तो और भी बुरी हो गई – ''हंसा का मन शहर में नहीं लगता जब तब वह शिकायत करती है। पति से गांव वापस चलने के लिए कहती है लेकिन वह बंदा तो जैसे बम्बई में रमता जा रहा है। सवेरे आराम से उठेगा, नहा धोकर पेंट कमीज पहन नीचे उतरेगा, छोटे से पान को मुंह में डालेगा, ऊपर से एक चुटकी तंबाकू। तब उसका चेहरा देखे कोई कैसा संतोष, कैसी तृप्ति....जिसके लिए वह मीठे–मीठे कदमों से काम को जाएगा।''[3] मध्यमवर्ग जो ऊंचे सपनो के लिए वह गांव कस्बे से महानगरों की और पलायन करते हैं और वहां पहुंचकर महानगर की संस्कृति में जल्दी से जल्दी अपने को बसा लेने का प्रयास करता है इसके लिए वह महानगर की संस्कृति, रहन–सहन, खान–पान और अन्य तौर–तरीकों को स्वयं तथा अपने परिवार को जल्दी से जल्दी आत्मसात करवा लेना चाहता है, स्वयं तो कर ही लेता है लेकिन स्वतंत्र सहज प्रवृत्ति के बच्चों के साथ वह महानगरीय संस्कृति में रचने बसने के लिए दबाव भी बनाता है। 'वरणांजलि' कहानी में मिश्र जी प्रमुख पात्र के रूप में आत्मकथन करते हुए महानगरीय संस्कृति में रमने के लिए बच्चों के साथ किए गए अन्याय की त्रासदी का चित्रण करते हैं – ''मैं तुम्हें बड़ा करने इस महानगर में ले आया था जहां कल्पना और जीवन को सीमित कर देने के लिए जैसे कटिबद्ध भीमकाय इमारतें पग पग पर खड़ी है। बच्चों को पालने बड़ा करने के लिए किसी महानगर से भयानक और कौन सा स्थान हो सकता है ? तुम्हें आदमी बनाने के लिए मेरे हाथों में सौंपा गया एक सांचा भी था जिसमें मैं तुम्हें बिठाकर देखता और प्रसन्न होता था कि तुम सज रहे हो धीरे–धीरे.....तुम्हें मैनर्स आना चाहिए, अंग्रेजी बोलना आना चाहिए, जिसका तुम्हारी आयु से कोई अनुपात नहीं बैठे ऐसी पुस्तकों का भार उठाना आना चाहिए, साइकिल चलाना आना चाहिए, घुड़सवारी आना, तैरना आना चाहिए अर्थात् क्या नहीं है, जो नहीं आना चाहिए..... तुम्हें अच्छा लगे या नहीं।''[4] बच्चे बहुत ही कोमल संवेदना व भावुक प्रवृत्ति के होते हैं और वे दिखावा छल कपट की दुनिया से दूर होते हैं। भौतिकता की इस दौड़ में दौड़ते माता–पिता उन्हें भी दौड़ाना चाहते हैं, कभी भी यह नहीं देखते कि उनकी रूचि कहां है। गांव व कस्बे में बालकों के भविष्य के उज्ज्वल ना होने की सोच से आशंकित रहते है। इसलिए बच्चों को महानगर की दुनिया में ले आते है, साथ ही उनकी स्वतंत्रता व बचपन में समाप्त कर देते है। महानगरीय संस्कृति में बालक अपने आपको सहज अनुभव कर पा रहा है या नहीं इसकी

Created by Universal Document Converter

परवाह माता–पिता नहीं करते। मिश्र जी ने अपनी कहानियों में ऐसे ही बच्चों का मनोवैज्ञानिक चित्रण किया है। जो शहर में आने के बाद गुमसुम हो जाते हैं। वे पहले से ही शहरी संस्कृति में पले बढ़े बच्चों के साथ अपने आप को असहज महसूस करते हैं इस परिस्थिति का यथार्थ चित्रण इनकी कहानियों में देखा जा सकता है। कहानी शुरूआत एक ऐसे ही बच्चे की कहानी है जो महानगर पढ़ाई के लिए लाया गया है। जहां वह अपने उस छोटे शहर को याद करता है और दूसरी ओर महानगरीय बच्चे अपनी जीवन शैली के अनुसार उस बच्चे की जीवन शैली नहीं होने से अपने साथ शामिल नहीं करते हैं।

बच्चे महानगर में आकर अकेलापन हीन भावना से ग्रसित हो जाता है। बच्चे के पिता उसे किसी भी प्रकार से शहर के बच्चों में शामिल करना चाहता है लेकिन वह हर बार असफल ही होते है बच्चे के पिता के आत्मकथन से यह स्थिति चित्रित होती है – ''मैं फिर उन्हें देखने के लिए बाहर निकला तो बरामदे के नुक्कड पर बैठ दिखा, पैर के नाखून से जमीन पर लकीरे खींचने की कोशिश कर रहा था। वहीं एक कोने में फुटबॉल भी पड़ी थी। मैंने उनके बारे में पुछा यह कुछ मिसमिसाया काफी खीजा लग रहा था तब यह खुद से उस माहौल से, वे फिर उसी तरह चले गए होंगे। वजह कुछ भी हो सकती है, मैंने सोचा यह अंग्रेजी नहीं बोलता, ढीली पोशाक पहनता है, उनके खेल नहीं जानता या अंकल आंटी पुकारना नहीं जानता।''[4]

गांव में रहने वाले माता–पिता की संतान महानगरों में जाकर बस जाते हैं और जब वृद्धावस्था में गांव की संस्कृति को आत्मसात करने वाले माता–पिता को मजबूरी में अपनी सन्तानों के पास रहना पड़ता है तो वे अपने आप को एक बंधी हुई जिंदगी में पाते हैं। गांव का स्वतंत्र खुला व सीधा–साधा व्यावहारिक जीवन उन्हें महानगरों में नहीं मिलता और वे एक कष्ट भरा जीवन शहरी संस्कृति में पाते हैं। महानगरीय संस्कृति उनकी पारंपरिक जीवन शैली से भिन्नता लिए होती है और इस अवस्था में पहुंचकर वे अपनी इस पारंपरिक जीवन शैली में परिवर्तन भी नहीं चाहते है। अतः महानगरीय रहन–सहन, संस्कृति, परिवेश उनके जीवन को कष्टमय बना देता है। मिश्र जी की कहानियां कचकौंध, घेरे, बेकसी, गिरफ्त, ढलान, आल्हा खंड, अशक्त, खूटें अक्षम, साधे, निरस्त, युद्ध आदि इसी प्रकार की कहानियां है, जिसमें महानगर में अपने जीवन की अंतिम अवस्था को व्यतीत करते हुए वृद्धा की व्यथा कथा है। शहरी संस्कृति की चकाचौंध और विलासमय जीवन को सुख समझने वाले मनुष्य को यह भौतिकता पूर्ण विलासमय जीवन इतना आकर्षित करता है कई इस जीवन स्तर को बनाए रखने के लिए वह कोई भी रास्ता अपनाने से हिचकते नहीं है। 'खुद के खिलाफ' कहानी में मिश्र जी ने ऐसे ही पति पत्नी के जीवन का उल्लेख किया है, जिसमें पति की नौकरी छूट जाने पर पत्नी को वैश्यावृत्ति में धकेल कर घर में सुख साधन उपलब्ध कराये जाते है। इसी कहानी में शहरी संस्कृति का चित्रण इस प्रकार किया गया है ''हाँ, बड़ा बेमुरौवत शहर है यह, जिसे पकड़ ना हो फौरन पकड़ लो वरना लोग खो जाते है.....फिर ढूंढते रहिए ता जिन्दगी।''[5] इसी प्रकार शहरी संस्कृति की संवेदनहीनता व मानवीय मूल्यों की क्षरण की कहानी है 'प्रतिमोह' जिसमें मुंबई महानगर में रहने वाले एक गरीब कबाड़ी वाले व्यक्ति द्वारा शहरी संस्कृति की संवेदनहीनता को बताते हुए एक छोटे बच्चे को शरण देकर मानवीय मूल्यों के क्षरण को रोकने का प्रयास किया गया है।

निष्कर्ष

मिश्र जी समकालीन कथाकारों में से एक ऐसे हस्ताक्षर है जो यथार्थ को महत्व देते है, वह भी अनुभूतयथार्थ को गांव या छोटे कस्बों से महानगर की ओर प्रस्थान करती नई पीढ़ी की स्वयं माता–पिता की बच्चों की जीवन शैली किस प्रकार इस नए परिवेश में अपने आप को समायोजित करने के लिए संघर्ष करती है और किस प्रकार इस शहरी संस्कृति में बस कर यह अपनी पुरानी जीवनशैली को भूल जाना चाहते हैं लेकिन पुरानी जीवनशैली में ही अपना संपूर्ण जीवन बिता देने वाले माता–पिता के सामने किस प्रकार शहरी जीवन के कारण संकट खड़ा हो जाता है, का चित्रण मिश्र जी की कहानियां करती है। नई पीढ़ी का शहर में बसना और अपने बच्चों को जल्दी से जल्दी इस संस्कृति में ढलने की अपेक्षा करना मिश्र जी की कहानियों में बहुत ही मार्मिकता के साथ चित्रित हुआ है, साथ ही ऐशो आराम व

Created by Universal Document Converter

चकाचौंध से भरी इस शहरी संस्कृति में मानवीय मूल्य वह संवेदनाओं को कठोरता के साथ समाप्त करने की परिपाटी देखी जा सकती है। महानगर में रहने वाले व्यक्ति में भावुकता उसके जीवन को सफलताओं की ओर ले जाने में बाधा उत्पन्न करती है। अतः शहर में बसना के लिए कठोर ह्रदय होना भी एक शर्त है। मिश्र जी ने शहरी संस्कृति की पतन की ओर जाती मनुष्यता की अपनी कहानियों के माध्यम से सच्चाई बयां की है।

सन्दर्भ ग्रंथ

1. गोविन्द मिश्र – कहानी समग्र–2, 'हमदर्दी' पेज नं. – 166
2. गोविन्द मिश्र – कहानी समग्र–2, 'गुरूजी' पेज नं. – 351
3. गोविन्द मिश्र – कहानी समग्र–2, 'आकरमाला' पेज नं. – 483
4. गोविन्द मिश्र – कहानी समग्र–1, 'शुरूआत' पेज नं. – 234
5. गोविन्द मिश्र, गोविन्द मिश्र की लोकप्रिय कहानियाँ, 'खुद के खिलाफ' पेज नं. – 129

Created by Universal Document Converter